JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं बहु बुद्धि का अध्ययन "

प्रो0 यशपाल सिंह

बी.एड. एवं एम.एड़. विभाग

एम.जे.पी. रोहिलखण्ड वि0वि0 बरेली (उ0प्र0)

योगेन्द्र कुमार शर्मा

शोध छात्र, पीएच0डी0 (शिक्षा शास्त्र)

एम.जे.पी. रोहिलखण्ड वि0वि0 बरेली (उ0प्र0)

शोध सारांश : प्रस्तुत अध्ययन "उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं बहु बुद्धि का अध्ययन" का उद्देश्य उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बहु–बुद्धि का अध्ययन करना। परिकल्पनाएं: उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बहु बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। वर्तमान अध्ययन की शोध विधि में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग उसके उद्देश्यों व विशेषताओं को ध्यान में रखकर किया गया है।शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श के रूप में 500 छात्र एवं 500 छात्राओं को यादृच्छिकीय न्यादर्श विधि से चयनित किया गया है। शोधकर्ता ने उपकरण के रूप में सांवेगिक बुद्धि परीक्षण – डॉ0 अरूण कुमार सिंह एवं डॉ0 श्रुतिनारायन एवं बहु बुद्धि परीक्षण प्रश्नावली का निर्माण डॉ यशपाल सिंह एवं योगेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा किया गया है। निष्कर्ष में पाया कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बहु–बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

महत्वपूर्ण शब्द : उच्च प्राथमिक स्तर, संवेगात्मक बुद्धि, बहु बुद्धि

प्रस्तावना :–

शिक्षा व्यक्तित्व का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, चारित्रिक, नैतिक, अध्यात्मिक एवं संवेगात्मक विकास करती है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान करने की योग्यता धारण करता है।, जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल जाता है, उसी प्रकार पशु समान मानव भी शिक्षा के प्रकाश से अपने भविष्य को उज्जवल तथा प्रकाशमय बनाता है। जिसके पश्चात् उसकी कीर्ति दूर–दूर तक फैली रहती है। शिक्षा एक ओर व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करती है जिससे व्यक्ति की उन्नति तथा प्रगति होती है। वहीं दूसरी तरफ उसे समाज का महत्वपूर्ण नागरिक बनाकर देश प्रेम की भावना उसमें पैदा करती है। शिक्षा प्राचीन परम्पराओं और संस्कृतियों काएक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तानान्तरण करती है। शिक्षा बालक के हृदय में देश प्रेम, बलिदान व निहित स्वार्थों का त्याग की भावना को जाग्रत करती है, शिक्षा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी के विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सार्थक भूमिका अदा करती है। निश्चय ही शिक्षा सतत् रूप से चलने वाली एक ऐसी गत्यात्मक प्रक्रिया है जो मानव को अपनी भूमिका प्रभावी ढ़ंग से अदा करने में सक्षम बनाती है एवं राष्ट्र के विकास में सहयोग प्रदान करती है। ''शिक्षा व्यक्ति की उस पूर्णता का विकास है, जिसकी व्यक्ति में क्षमता है''।

शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक तथा छात्र दोनों के बीच परस्पर आदान–प्रदान होता है। शिक्षक अपने व्यक्तित्व तथा ज्ञान के विभिन्न अंगों के प्रभाव से छात्र के व्यवहार में परिवर्तन तथा सुधार करता है। जिससे वह सम्यक् विकास की ओर अग्रसर होता है। छात्र को विद्यार्थी, शिक्षार्थी और शिष्य आदि नामों से जाना जाता है। उपरोक्त पक्षों के अतिरिक्त एक पक्ष और होता है, जिसको पाठ्यक्रम कहा जाता है। इन तीनों पक्षों में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान होता है। शिक्षा की कोई भी प्रक्रिया प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से शिक्षक के बिना पूर्ण नहीं हो सकती है।

शिक्षा के द्वारा ही बालक धर्म, राज्य, समुदाय, सभ्यता और संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करता है जिससे उसमें राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक तत्व एवं अनिवार्य घटक ''समाज के साथ समायोजन'' की क्षमता का विकास होता है। प्रत्येक शिक्षार्थी को अपने जीवन में एक बड़ा लक्ष्य लेकर चलना चाहिए। जीवन में परिश्रम के बिना कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता है। शिक्षा विकास की धुरी है। शिक्षित व्यक्ति न केवल अपने परिवार के भरण पोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है बल्कि वह सम्पूर्ण समाज, प्रदेश एवं देश के विकास में भी अमूल्य योगदान दे सकता है।

किशोरावस्था बड़े ही तूफान और संघर्ष की अवस्था कहलाती है। उच्च प्राथमिक स्तर के बालक संवेगात्मक रूप मजबूत नहीं होते हैं और उनकी संवेगात्मक बुद्धि, बहु बुद्धि एवं व्यक्तित्व एक दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं, जिस कारण उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती रहती है। प्रायः शैक्षिक उपलब्धि का कम होना और अधिक होना एक विद्यार्थी के व्यक्तित्व को सर्वाधिक

प्रभावित करता है। प्रस्तुत शोध उक्त चरों का एक दूसरे के ऊपर प्रभाव को जानने का प्रयास है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :–

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास का उनके भावी जीवन में विशेष महत्व है। इस अवधारणा की पुष्टि माध्यमिक शिक्षा आयोग के इस कथन से हो जाती है जिसमें उन्होंने कहा है कि ''भारत के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है''।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोधकर्ता उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् कक्षा 7 के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, बहु बुद्धि का अध्ययन है। विद्यालय में वैयक्तिक भिन्नता से परिपूर्ण अनेक प्रकार के विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते हैं। उनमें से कुछ संवेगात्मक रूप से परिपक्व, कुछ बहु–बुद्धि की विशेषता वाले, कुछ प्रतिभाशाली, सामान्य, पिछड़े, मानसिक रूप से विकलांग, शारीरिक रूप से विकलांग आदि प्रकार के बालक होते हैं। सामान्यतः जो बालक संवेगात्मक रूप से परिपक्व होगा वह शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छे परिणाम प्राप्त करेगा। संवेगात्मक रूप से अपरिपक्व बालक का व्यक्तित्व भी पूर्णतः विकसित नहीं हो पाता। बालक के व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए उसका जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में आने वाली समस्याओं का समाधान विवेकपूर्ण विधि से करना आवश्यक है। उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में विवेकशीलता का विकास तभी किया जा सकता है जब उसकी बौद्धिकता का विकास बुद्धि की विभिन्न विमाओं को विकसित करके किया गया हो।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत बालकों का चयन संवेगात्मक बुद्धि व बहु बुद्धि के अध्ययन के लिए किया है। इस स्तर के बालकों की सामाजिक परिस्थितियों में समायोजन, अपने साथियों के साथ मित्रवत व्यवहार, व्यवहारिक तथा वातावरणीय कारक विशेष रूप बढ़ते हुए क्रम में होते हैं। उच्च प्राथमिक स्तर के बालक सीखने में सक्षम होते हैं। उनकी मौखिक अभिव्यक्ति, सुनने सम्बन्धी योग्यता, लेखन कार्य, मूलभूत पठन–पाठन की क्रियाओं में उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति तथा बौद्धिक योग्यताओं में सार्थक समानता दिखाई देती है। इस स्तर के बालक अनेक कारणों, जिनमें वंशानुक्रम और वातावरणीय कारण महत्वपूर्ण हैं, से प्रभावित होते हैं। शोध कार्य में अनुसंधानकर्ता ने बालकों की संवेगात्मक बुद्धि, बहु बुद्धि एवं व्यक्तित्व की अनेक विशेषताओं का अध्ययन करने का निश्चय किया है।

प्रस्तुत शोध कार्य के निम्नवत् उद्देश्य हैं–

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बहु–बुद्धि का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना :–

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है।

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

2. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बहु बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

सम्बन्धित साहित्य –

डेनिज (2013) द्वारा भावी शिक्षकों में सांवेगिक बुद्धि व समस्या समाधान कौशल के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य सांवेगिक बुद्धि तथा समस्या समाधान कौशल के मध्य संबंध की जांच करना था, अध्ययन हेतु मुगला विश्वविद्यालय टर्की के 386 छात्र अध्यापकों (जिसमें 224 छात्राएं व 182 छात्र सम्मिलित थे) को न्यादर्श के रुप में लिया गया।

इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि सांवेगिक बुद्धि सार्थक रुप से समस्या समाधान कौशल से सहसम्बन्धित है। सांवेगिक बुद्धि में विकास करके समस्या समाधान कौशल को सुधारा जा सकता है।

रामी, बेडाकथी व जामशीदी (2014) ने भावात्मक बुद्धि तथा सृजनात्मक कारकों के मध्य सहसम्बंध पर अध्ययन किया। गुच्छ तकनीकी द्वारा 375 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रुप में लिया गया। अध्ययन का परिणाम यह प्राप्त हुआ कि सृजनात्मकता के सहपैमाना तथा भावात्मक बुद्धि में सार्थक तथा धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

कारमेली व अन्य (2013) ने भावात्मक बुद्धि तथा सृजनात्मकता: उदारता तथा प्रबलता की मध्यस्त भूमिका पर शोध कार्य किया। इस अध्ययन का उद्देश्य था कि भावात्मक बुद्धि कार्यस्थल पर सृजनात्मकता को बढ़ा सकती है या नहीं। अध्ययन में परिणाम इस प्रकार प्राप्त हुआ कि भावात्मक बुद्धि जिसकी ज्यादा होती है उसका उदारता का स्तर उच्च होता हैं। साथ ही यह सृजनात्मकता को बढ़ाता है।

अरोरा (2016) ने किशोरो की सृजनात्मकता तथा भावात्मक बुद्धि के मध्य सम्बन्ध पर अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में पंजाब (भारत) के लुधियाना जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 10+2 कक्षा के 200 विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि द्वारा लिया गया। उपकरण के रूप में डॉ. एस.के तथा श्रीमति शुभा मंगल की इमोशनल इन्टेलीजेन्ट इनवेन्टरी तथा बाकर मेहन्दी का सृजनात्मक चिंतन परीक्षण का उपयोग किया गया। आँकड़ो का विश्लेषण टी–टेस्ट तथा सहसम्बन्ध गुणांक द्वारा किया गया। परिणाम यह प्राप्त हुआ कि भावात्मक बुद्धि तथा सृजनात्मक के मध्य मजबूत धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

शोध विधि :

वर्तमान अध्ययन की शोध विधि में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग उसके उद्देश्यों व विशेषताओं को ध्यान में रखकर किया गया है। शोध समस्या का विषय ''उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं बहु बुद्धि का अध्ययन ''से सम्बन्धित है।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श के रूप में 500 छात्र एवं 500 छात्राओं को यादृच्छिक न्यादर्श विधि से चयनित किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :

इस अध्ययन हेतु शोधकर्ता ने उपकरण के रूप में 1. सांवेगिक बुद्धि परीक्षण – डॉ0 अरूण कुमार सिंह एवं डॉ0 श्रुतिनारायन एवं 2. डॉ यशपाल सिंह एवं योगेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा स्वनिर्मित बहु बुद्धि प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने आंकड़ो का ऑकलन कर क्रान्तिक मान प्राप्त करके प्राप्त परिणामों का सारणीयन व उनकी परिकल्पनाओं के आधार पर व्याख्या की है जो इस प्रकार है –

परिकल्पना संख्या–01 ''उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है'' का सत्यापन।

तालिका सं0–01

उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

क्रम सं0	विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक मान	सार्थकता
1	छात्र	500	17.61	3.30	0.20	1.40	असार्थक
2	छात्राएं	500	17.89	3.28			

तालिका सं0–01 के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का परीक्षण प्राप्ताँकों का मध्यमान 17.61 एवं मानक विचलन 3.30 ज्ञात हुआ तथा छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 17.89 एवं मानक विचलन 3.28 प्राप्त हुआ।

दोनों के मध्य मानों में अन्तर पाया गया, यह अन्तर सार्थक है या नहीं, के लिए क्रान्तिक अनुपात मान की गणना करने पर यह मान 1.40 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता सारणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 1.96 एवं 2.58 से कम पाया गया। अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

अतः परिकल्पना संख्या–01 ''उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है''–स्वीकृत की जाती है।

आरेख सं0 1

उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन का आरेखीय प्रदर्शन

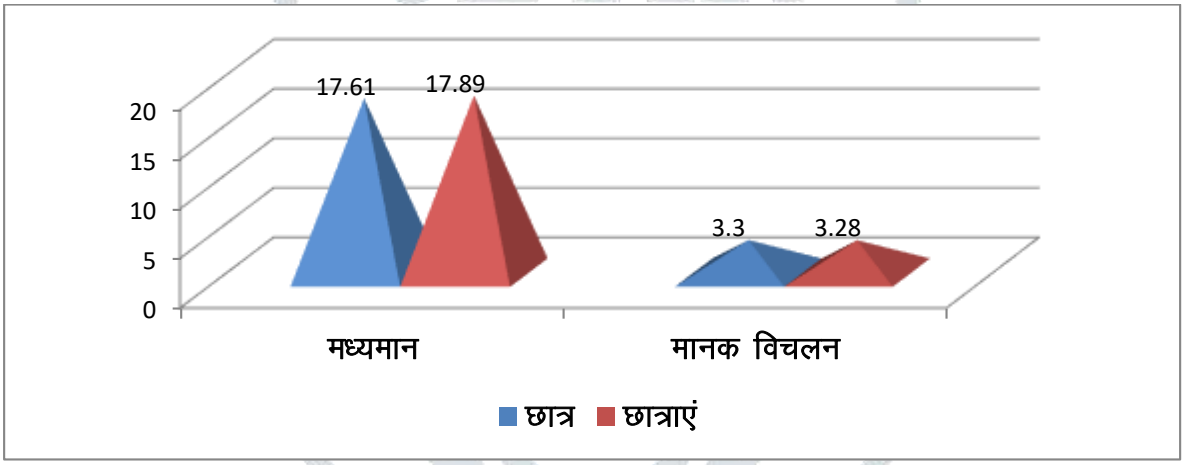

आरेख सं0 01 से स्पष्ट होता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का परीक्षण प्राप्ताँकों का मध्यमान 17.61 एवं मानक विचलन 3.30 ज्ञात हुआ तथा छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 17.89 एवं मानक विचलन 3.28 प्राप्त हुआ।

परिकल्पना संख्या–02 "उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बहु बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है" का सत्यापन।

तालिका सं0–0.2

उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बहु बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

क्रम सं0	विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक मान	सार्थकता
1	छात्र	500	40.67	16.82	1.03	1.15	असार्थक
2	छात्राएं	500	41.86	16.10			

तालिका सं0 02 के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की बहु–बुद्धि का परीक्षण प्राप्ताँकों का मध्यमान 40.67 एवं मानक विचलन 16.82 ज्ञात हुआ तथा छात्राओं की बहु–बुद्धि का मध्यमान 41.86 एवं मानक विचलन 16.10 प्राप्त हुआ। दोनों के मध्य मानों में अन्तर पाया गया, यह अन्तर सार्थक है या नहीं, के लिए क्रान्तिक अनुपात मान की गणना करने पर यह मान 1.15 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता सारणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 1.96 एवं 2.58 से कम पाया गया। अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बहु–बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

अतः परिकल्पना संख्या–02 "उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बहु–बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है"–स्वीकृत की जाती है।

आरेख सं0–02

उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बहु बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन का आरेखीय प्रदर्शन

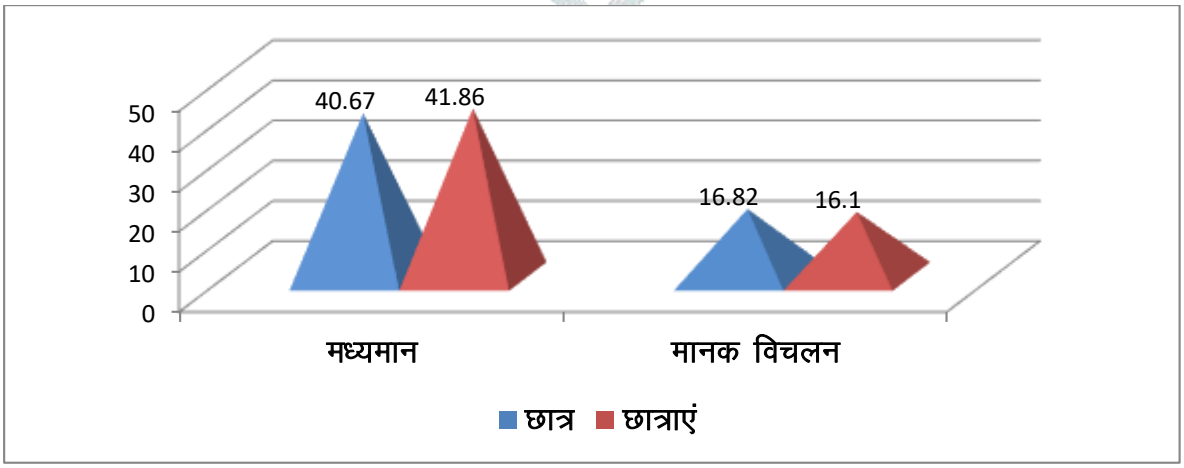

आरेख सं0 0.2 से स्पष्ट होता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की बहु–बुद्धि का परीक्षण प्राप्ताँकों का मध्यमान 40.67 एवं मानक विचलन 16.82 ज्ञात हुआ तथा छात्राओं की बहु–बुद्धि का मध्यमान 41.86 एवं मानक विचलन 16.10 प्राप्त हुआ।

प्रस्तुत शोध पत्र का निष्कर्ष :

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बहु–बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1.एलीच, सी0 एम0 (1987), ''ए बैटर विजन ऑफ स्कूल्स'' *एलन एवं बेकन, इनकार्पोरेशन,* लंदन।

2.भटनागर, आर0 पी0 एवं भटनागर, ए0 बी0 एवं भटनागर, अनुराग (2015), ''शिक्षा अनुसंधानः प्रक्रिया, प्रकार एवं सांख्यिकीय आधार'' आर0 लाल बुक डिपो,मेरठ।

3.गुप्ता, के0 एल0 (2010), ''परिमाणात्मक विधियाँ'' नवनीत प्रकाशन गृह, सदर बाजार, आगरा–1।

4.सिंह, गया (2013), ''शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ'' आर0 लाल बुक डिपो,मेरठ।

5.सिंह, रामपाल एवं शर्मा, ओ0 पी0 (2005), ''शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2।

6.अहमद, सैयद सलमान (2008), ''फिनोमिनोलॉजिकल एनलसिस ऑफ सेल्फहुडः वेलिडेशन ऑफ द अफेक्ट एण्ड कंट्रोल स्केलस ऑफ द मेथड, जनरल ऑफ द इंडियन ऐकेडमी ऑफ अप्लाइड साइकोलॉजी, नागपुर, वाल्यूम. 34, न0 1, 163–173।

7.भटनागर, ए0 बी0 एवं भटनागर, मीनाक्षी एवं भटनागर, अनुराग (2014), ''अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया'' आर0 लाल बुक डिपो,मेरठ।

8.गुप्ता, एस0 पी0 एवं गुप्ता, अलका (2018), '' उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान–सिद्धान्त एवं व्यवहार'' शारदा पुस्तक भवन, यूनिवर्सिटी रोड, प्रयागराज।

9.गुप्ता, एस0 पी (2003), ''आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'' शारदा पुस्तक भवन, 11 यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।

10. अग्रवाल, जे0 सी0 एवं अग्रवाल, एस0 (1990), ''भारत में शिक्षा'' कन्सेप्ट पब्लिकेशन कम्पनी, ए/15–16, कामर्शियल ब्लॉक, नई दिल्ली।

11. इन्दु एच (2009), इमोशनल इंटेलिजेन्स ऑफ सेकेन्डरी टीचर ट्रेनीज़, *एजुट्रेक,* 8(9), 34–36.

12. बेस्ट, जे0 डबलू0 (1963), ''शिक्षा में अनुसंधान'' प्रेन्टिस हॉल, इनकार्पोरेशन, इग्लिवुड क्लिफ।

13. बुश, एम0 बी0 (1987), ''रिसर्च इन एजुकेशन थर्ड सर्वे'' (1978–83), एन0 सी0 ई0 आर0 टी0, नई दिल्ली.।

14. गैरट, एच0 एफ0 (1949), ''ए रिव्यू एण्ड इंटरपिटेशन ऑफ फैक्टर रिलेटेड टू स्कूलिस्टिक सक्सैस इन क्लासेज ऑफ ऑर्ट एण्ड साइन्स एण्ड टीचर क्लासेज'', जे0 एक्स. एजू., 18, 21–138.।

15. शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार (1953), ''माध्यमिक शिक्षा आयोग रिपोर्ट'', नई दिल्ली।

16. भावलकर, स्मिता एवं अमल्नेरकर, स्वाति (2008), एनहांसिंग इमोशनल इंटेलीजेन्स, इनहांसिंग क्वालिटी ऑफ लाइफ, *एजुट्रेक,* 7(5), 14–15.

17. नारायण, श्रुति एवं विजयलक्ष्मी (2010), इमोशनल इंटेलिजेंस एंड एकेडेमिक एचीवमेंट ऑफ स्कूल चिल्ड्रन, *साइको लिंग्वा* , 40(1–2), 80–83.

18. तिवारी, दीपा एवं सक्सेना, शालिनी (2013) 10+2 स्तर पर कला तथा विज्ञान वर्ग में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं के स्वप्रत्यय एवं सांवेगिक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन, *रिसर्च लिंक 107,* 11(12), 123–125.

19. गोलमेन, डी. (1995), इमोशनल इन्टेलिजेन्स, बैनटॉम बुक, न्यूयॉर्क।

20. एडियामो, ए. डी. (2003), द बफरिंग इफेक्ट ऑफ इमोशन इन्टेलिजेन्स ऑन द एडजस्टमेंट ऑफ सेकंडरी स्कूल स्टूडेंट इन ट्रांशेसन. *इलेक्ट्रॉनिक जर्नल ऑफ रिसर्च इन एजुकेशनल साइकोलॉजी* . 6(2), 79–90.

21. गोरे, आर0, कटियार, बी0 (2011), माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता, *संदर्भ (वैश्विक शैक्षिक परिपेक्ष्य)* वर्ष–1, अंक–1, पृष्ठ सं0.–67–74।

22. श्रोत्रिया, एन0 (2009), पर्सनालिटी डिफरेन्सेन अमंग मेल एण्ड फीमेल टीचर्स, *द एसियन मैन,* वाल्यूम–3(2) पृष्ठ सं0–188–191।

23. डगलस, एच0 एल0 ''द रिलेशन ऑफ हाई स्कूल प्रिपरेशन एण्ड सर्टेन अदन फैक्टर टू एकेडमिक सक्सेस एट द यूनिवर्सिटी ऑफ आरेगन'', न्यूगिनी.।

24. बारलिंगे, एम0 के0 (1971), ''ए स्टडी ऑफ द इन्फलूएन्स ऑफ मदरर्स पर्सनालिटी ऑन द पर्सनालिटी ऑफ द चाइल्ड ऑन ए सैम्पल ऑफ महाराष्ट्र स्टेट''।

25. बी0 कुप्पूस्वामी (1974), ''उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान'' स्टेरलिंग पब्लिशिंग लि0 नई दिल्ली।

26. कोहन, पी0 ए0 (1981), ''स्टूडेन्ट रेटिंग ऑफ इन्सट्रक्शन एण्ड स्टूडेन्ट अचीवमेन्टः ए मेटा एनलसिस ऑफ मल्टीसेक्शन वैलेडिटी स्टडीज।

27. आर्मिश, जे0 एण्ड एम0 फ्रान्सिकोनी, (2000), '' द इफेक्ट ऑफ पेरेन्टस इम्पलोयमेण्ट ऑन चिल्डरन्स ऐजुकेशनल अटेनमेन्ट'' IZA डिस्कशन, PP 215, इन्सटीटयूट फॉर द स्टडी ऑफ लेबर (IZA) बॉन।

28. हेमलता, मल्लूर, (2008), ''सेल्फ कॉन्फिडेन्स, हयूमन रिलेशनशिप एण्ड ऐकेडमिक परफोरमेन्स ऑफ हायर सेकेण्डरी बॉयज'' जनरल ऑफ साइकोलोजिकल रिसर्च, जनवरी, 2008, वाल्यूम. 52, नं0 1, 14–16।

29. गुप्ता, बिन्दु (2008), ''रोल ऑफ पर्सनालिटी इन नोलेज शेयरिंग एण्ड नोलेज इक्वेजन बिहेवियर, जनरल ऑफ द इंडियन ऐकेडमी ऑफ अप्लाइड साइकोलॉजी, वाल्यूम 34, न01, 143–149।

30. अल्पोर्ट, जी0 डब्लू0 (1959), ''पर्सनेलिटी एण्ड साइकोलॉजिकल इण्टरपिटेशन'' कॉस्टेबल एण्ड कं0 लि0, लन्दन।

31. गैरट, एच0 ई0 (1980), ''स्टेटिस्टिक्स इन साइकोलॉजी एण्ड एजुकेशन'' डैव्ड मैके कं0।

32. बेस्ट, जॉन0 डब्लू0 (1977), ''रिसर्च इन एजुकेशन'' प्रेन्टिस हॉल ऑफ इंडिया प्रा0 लि0।

33. अग्रवाल, जे0 सी0 (1975), ''शैक्षिक अनुसंधान'' आर्य बुक डिपो।

34. चन्द्रशेखरन, के0 (2008), '' ए स्टडी ऑफ इन्वायरमेंट ऑन पर्सनेलिटी डवलपमेन्ट'' जनरल ऑफ साइकोलोजिकल रिसर्च, जनवरी, 2008 वाल्यूम, 52 नं0 1, 17–18।

35. त्रिपाठी, सुनील तथा सिंह, जय (2017), ''जौनपुर जले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन''।

International journal of advance educational research,ISSN: 24566157,Vol.2issue1,Jan.2017,pp www.educationaljournal.org.

36. वर्मा, अरूणा (2009), ''विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, मूल्यों एवं संवेगात्मक परिपक्वता पर पाठ्यसहगामी क्रियाओं के प्रभाव का अध्ययन''।
37. अरोरा, आर0 के0 (1992), इन्टरनेशनल इफैक्ट ऑफ क्रियेटिविटी एण्ड इंटैलीजेन्स ऑन इमोशनल स्टाबिलिटी, पर्सनालिटी एडजेस्टमेण्ट एण्ड ऐकेड़मिक अचीवमेण्ट. Fifth Survey of Educational Research, 1988-92, Vol.II, NCERT, 1860.
38. **Barchard, K. A. (2003).** Does Emotional Intelligence Assist in the Prediction of Academic Success? Educational and Psychological Measurement, 63, 840-858.
39. **Barton, K., Dielman, T. E., & Cattell, R. B. (1972).** Personality And IQ measures as Predictors of School Achievement. Journal of Educational Psychology, 63(4), 398-404.
40. **Bharwaney, G. (2007).** Emotionally Intelligent Living. UK: Crown House Publishing Limited.
41. **Cooper, R. K. (1997).** Applying emotional intelligence in the workplace. Training & Development, 38, 31-38.
42. **Gardner, H. (1993a).** Frames of mind: The theory of multiple intelligences. New York, NY: Basic Books.
43. **Goleman, D. (1995).** Emotional Intelligence. New York: Bantam Books.
44. **Goleman, D. (1998).** Working with emotional intelligence. New York: Bantam Books.
45. **Good, C. V. (1959).** Dictionary of Education. New York:McGraw Hill Book Company.
46. **D'Ambrosio, M., (2002).** Emotional Intelligence in the Classroom. Academic Exchange Quarterly, 6(2), 46-51.
47. गाखर, एस0 सी0 (2003), इमोशनल मैच्यूरिटी ऑफ स्टूडेण्टस एट सैकेण्डरी स्टेज. सेल्फ–कंसेप्ट एण्ड ऐकेडमिक अचीवमेण्ट. जॉर्नल ऑफ इण्डियन एजूकेशन, 29(3), 100.106।
48. गाखर, एस0 सी0 एवंम मनहास, के0 सी0(2005), कॉगनेटिव कोरिलेटस ऑफ इमोशनल इन्टेलिजेन्स ऑफ एडोलसेण्टस. जर्नल ऑफ एजूकेशन, 2(2), 78–83.
49. कौर, एम0. (2001), ''ए स्टडी ऑफ इमोशनल मैच्युरिटी ऑफ एडोलसेण्ट इन रिलेशन टू इन्टैलीजेन्स, एकेडमिक अचीवमेण्ट एण्ड एन्वायरमेण्टल कैटलिस्ट'', पीएच0डी0 थीसिस इन साइकोलॉजी, पंजाब यूनिवर्सिटी।
50. **Kaufhold, J. A., & Johnson, L. R. (2005).** The Analysis of the Emotional Intelligence Skills and Potential Problem. Areas of Elementary Educators Education, 125 (4), 615-626.